कहानी

हराई

डॉ. अमल सिंह 'भिक्षुक'

पहाड़ीगाँव, एक अत्यंत ही शांत, किन्तु संवेदनशील गाँव है, जो शहर से लगभग बारह किलोमीटर दक्षिण, कैमूर पहाड़ी की गोद में बसा हुआ है। पहाड़ी का सौंदर्य और उसकी नैसर्गिकता देखते ही बनती है–घने जंगलों से ढकी हुई, दूर-दूर तक फैली हरियाली, और आसमान में तैरते बादलों के पीछे से झाँकती धूप। परंतु, इस सौंदर्य के पीछे एक गहरी उदासी छिपी है, जो यहाँ के लोगों के जीवन की कठोर वास्तविकता से उपजी है।

कैमूर पहाड़ी के गर्भ में अनगिनत 'दरि'—यानी गुफाएँ और कन्दराएँ–छिपी हुई हैं, जो प्राचीन काल से ही इस इलाके का हिस्सा रही हैं। इन दरियों में प्राकृतिक रहस्य और भय एक साथ महसूस होता है। अक्सर ये गुफाएँ अनजान खतरों और आश्रयों की कहानियाँ बयां करती हैं। इन गुफाओं के नजदीक बसे पहाड़ीगाँव के लोग, अपने दुख और संघर्ष को जैसे इन्हीं दरियों में छुपा देते हैं, जैसे गुफाएँ इनकी कहानियों का गवाह हों। गाँव की धूल-मिट्टी में घुले हुए जीवन के संघर्ष हर ओर दिखाई देते हैं। टूटी-फूटी झोंपड़ियाँ, जहाँ दरवाजे पर ही गरीबी पसरी होती है, खेतों की मेड़ पर जमी हुई परिश्रम की लकीरें, और जंगली पौधों की झुरमुटों में छिपे हुए बेजान चेहरों की कहानियाँ, यहाँ की सच्चाई बयान करती हैं। यहाँ की हवा में पसरी हुई नीरवता और शांति में एक अजीब सी असहजता महसूस होती है, जैसे किसी बड़े तूफान से पहले की खामोशी हो।

हराई के समय गाँव का पूरा वातावरण एक भयावह सन्नाटे से भर जाता है। खेतों में काम करते किसान, जैसे जमींदार की आँखों से नजरें झुकाए, डर और बेबसी में काम करते जाते हैं। फसल का एक बड़ा हिस्सा जमींदार के पास जाता है, और जो बचता है, वह इनके परिवार के लिए पर्याप्त नहीं होता। जमींदारी प्रथा की इस कठोरता ने इस गाँव को पीढ़ियों से अपनी मर्जी का गुलाम बना रखा है।

गाँव की शामें भी कुछ अलग नहीं होतीं–आसमान में सूरज ढलते ही जैसे यहाँ की उम्मीदें भी ढलने लगती हैं। झोपड़ियों से उठता धुआँ, भूख और बेबसी की गंध के साथ मिलकर हवा में घुल जाता है। जमींदार की हवेली के सामने से गुजरते हुए लोगों के चेहरे पर दबी हुई घुटन और अपमान की रेखाएँ स्पष्ट दिखाई देती हैं। यहाँ हर व्यक्ति जैसे किसी अदृश्य बेड़ियों से जकड़ा हुआ है, जिसके आगे उसकी जीवनशक्ति और आत्मसम्मान दोनों ही घुट-घुटकर मर रहे हैं।

यह गाँव सिर्फ प्राकृतिक सुंदरता का ही नहीं, बल्कि मनुष्य की सहनशीलता, उसकी पीड़ा और उसकी बेबसी का भी प्रतीक है। यहाँ की मिट्टी में जितनी गहराई से बीज बोए जाते हैं, उतनी ही गहराई से जमींदारी प्रथा के जुल्मों के निशान भी दफन हैं। पहाड़ीगाँव के एक कोने में सूरज की पहली किरणें धीरे-धीरे उभरती हैं, मानो किसी पुराने चित्र पर हल्की सुनहरी रेखाएँ खींच दी हों। गांव की हरी-भरी

घाटियों के बीच बसे खेतों पर ओस की बूँदें चमक रही हैं। किसान अपने घरों से निकलकर हल और बैलों के साथ तैयार खड़े हैं। हराई का दिन है—वह दिन जब किसान अपनी मेहनत को किसी और के लिए समर्पित करने जाते हैं। बैल की घंटियाँ और किसानों के कदमों की धीमी आवाज़ खेतों में गूंजने लगती है। सबसे पहले, जमींदार का खेत दिखता है, जिसके चारों ओर ऊँची-ऊँची कंटिले झाड़ियाँ लगी हैं, मानो बाकी किसानों के खेतों से अलग करने के लिए बनाई गई हों। रेयान, जो खुद अपनी भूख-प्यास मिटाने के लिए कठिन संघर्ष करते हैं, जमींदार के खेतों में हल चलाने को मजबूर हैं। आकाश में सूरज चढ़ने के साथ-साथ किसानों की कमर झुकती जाती है। पसीने की बूँदें उनके माथे से गिरकर मिट्टी में मिल जाती हैं, जैसे कि उनकी मेहनत भी उन्हीं की तरह धरती में समा जाने वाली हो। परंतु उस मिट्टी से उगने वाली फसलें कभी उनके घरों तक नहीं पहुँचतीं। वे बस जमींदार की तिजोरी भरती हैं।

गांव के एक कोने में किसी बूढ़ी दादी की खाँसी गूंजती है, शायद भूख से। गांव का हर आदमी, औरत और बच्चा जानता है कि उनकी किस्मत जमींदार के हाथ में है। और इस अमानवीय व्यवस्था के तले दबे, वे अपने ही खेतों से पराये हो चुके हैं।

सदियों से चला आ रहा यह नियम, हराई का यह अत्याचार, अब एक परंपरा बन चुका है। परंतु रियान की आँखों में एक गहरी थकान और उदासी बसी हुई है—कहीं न कहीं, एक अदृश्य विद्रोह भी, जो कभी न कभी इस व्यवस्था को तोड़ने की चाह रखता है। लेकिन आज गांव की मिट्टी पर पसरा सन्नाटा भारी था, जैसे किसी तूफान के पहले की ख़ामोशी। आसमान पर हल्के बादल उमड़ रहे थे, मानो गाँव के लोगों की परेशानियों को समेटे हुए। किसान का छोटा सा घर, गाँव के किनारे पर बसा, रोज़ की ही तरह शांत था, पर उस शांति में अजीब सा भय समाया हुआ था। सुबह के उजाले में भी हर तरफ़ एक अंधेरा छाया हुआ था, मानो हर क़दम पर कोई साया हो, जो किसी भी वक़्त आकर जान ले सकता है।

जमींदार का अत्याचार अब आम बात हो गई थी, पर फिर भी हर बार दिल में एक नई चोट लगती थी। खेतों में काम करवाने के लिए जमींदार के ये दो प्यादे, पंडित और कहाँर, किसी भेड़िये की तरह गाँव वालों के बीच घूमते रहते थे। उनके क़दमों की आहट सुनते ही गाँव वालों के दिल दहल जाते थे। आज फिर वही क़हर बरपा था।

सूरज अपनी पूरी चमक दिखाने लगा था, पर किसान के चेहरे पर उदासी और डर की परछाईं ने गहरा साया डाला हुआ था। वह अपने घर के सामने बैठा अपनी किस्मत को कोस रहा था। तभी दूर से पंडित और कहाँर की आवाज़ें सुनाई दीं, जो हवा में गूंज रहीं थीं। उनके ठहाकों में एक ऐसा क्रूर आनंद था, जिसे सुनते ही किसान का खून सूख गया। पंडित, जो हमेशा अपनी चालाकी और तीखी ज़ुबान के लिए मशहूर था, ज़ोर से ठहाका मारते हुए बोला, "अरे रियान, कहाँ भाग रहा है? जमींदार के खेतों में काम नहीं करेगा तो तेरी खैर नहीं! चल, अपनी बीवी को भेज, उसे काम पर लगा दें!"

रेयान का चेहरा सफेद पड़ गया, उसकी ज़ुबान मानो लड़खड़ा गई हो। गिड़गिड़ाते हुए बोला, "पंडी जी, मेरी बीवी अभी घर के काम में लगी हुई है, उसे मत ले जाइए। हम सब खेत का काम कल कर देंगे।" उसकी आवाज़ में बेबसी और डर दोनों साफ़ झलक रहे थे।

कहाँर, जो हमेशा ताकत के जोर पर अपनी बात मनवाता था, व्यंग्य से हंसते हुए बोला, "कल? अरे, आज ही काम होगा। चल, अब ज्यादा बहस मत कर, वरना बुरा होगा।"

किसान की आंखों में एक अजीब सी खौफनाक तस्वीर उभरने लगी। उसका दिल कह रहा था कि कुछ बुरा होने वाला है, पर उसके पैरों ने जैसे ज़मीन में जड़ें पकड़ लीं थीं। वह हिल भी नहीं सका। पंडित और कहाँर की निगाहें शिकार पर जमी थीं, जैसे भूखे शिकारी। दोनों बिना किसी संकोच के किसान के घर में घुस गए। भीतर किसान की पत्नी, जो अब तक अनजाने खतरों से बेखबर थी, पानी भरे घड़े से नहा रही थी। जैसे ही उसने पंडित और कहाँर की आहट सुनी, उसकी आंखों में खौफ का साया साफ़ झलकने लगा। वह घबराकर साड़ी से अपने गीले शरीर को ढँकने लगी, और कंपकंपाते स्वर में बोली, "आप सब कुछ तो शर्म करिए, मैं अभी नहा रही हूँ!"

पंडित ने हंसते हुए अपने कपटी स्वर में जवाब दिया, "शर्म औरतों के लिए होती है, हमारे लिए नहीं। तुझे तो मालिक के खेत में काम करना है, समझी? चल, तेरे लिए ये रोज़ की बात है, कोई नई नहीं।"

कहाँर बेपरवाह ढंग से उसकी कलाई पकड़ता है, और जबरदस्ती उसे खींचने लगता है। उसकी पत्नी की आंखों में आंसू भर आते हैं, पर उसकी आवाज़ में कोई ताकत नहीं। वह बेबस होकर बिलखने लगती है, पर उसकी रिरियाहट उन निर्दयी लोगों के सामने कोई मायने नहीं रखती।

किसान की पत्नी रिरियाते हुए, "छोड़ दीजिए, मेरी बेटी घर पर अकेली है। मुझे उसके पास रहना है।"

कहाँर उसकी बात को हंसी में उड़ाते हुए निर्लज्जता से बोला, "बेटी? अरे! उसे भी बड़ा होकर यही करना है। अभी चल तू, खेत में रोपनी करनी है। मालिक का हुक्म है।"

किसान ने अपनी पत्नी की बेबसी और अपमान को आंखों में आंसू लिए देखा, पर उसकी जुबान और हिम्मत मानो बर्फ बन चुकी थी। वह कुछ बोल नहीं पा रहा था। उसकी पत्नी की चीखें उसके दिल में उतर रही थीं, पर उसके होंठों पर ताले लग गए थे। पंडित फिर उसकी ओर मुड़ा, और ठंडे स्वर में बोला, "और सुन, ज्यादा जुबान चलाई तो तेरी बीवी ही नहीं, बेटी को भी ले जाएंगे। मालिक के खिलाफ जाने का अंजाम बहुत बुरा होगा, ये मत भूल।"

किसान सिर झुकाए खड़ा रहा। उसकी आंखों में अपमान, दर्द और बेबसी का समंदर उमड़ रहा था। पंडित और कहाँर उसकी पत्नी को घसीटते हुए खेत की ओर ले गए, और वह लाचारी में खड़ा-खड़ा देखता रह गया।

धुंधली शाम का वक्त था। सूरज ढलने को था, और आसमान में लालिमा फैली हुई थी। गाँव के मिट्टी के घरों से निकलता धुआं हवा में घुल रहा था, मानो गाँव के हर कोने में फैले दुख और पीड़ा का प्रतीक हो। हल्की ठंडी हवा चली, पर वह किसी को सुकून देने के बजाय एक अनजाने डर से भर देती थी।

चारों ओर एक अजीब सी खामोशी थी, जो मन में बेचैनी भर देती थी। गाँव की कच्ची गलियों में बहुत कम लोग दिख रहे थे, जैसे सभी किसी अनहोनी से बचने के लिए घरों में छिप गए हों।

एक बुढ़ी महिला अपने घर के सामने बैठी थी। उसका चेहरा थका हुआ और चिंता से भरा था। उसने अपनी पल्लू से अपना सिर ढका हुआ था और उसकी आंखें, जिनमें वर्षों की पीड़ा छिपी हुई थी, अब आस-पास के माहौल को खाली नजरों से देख रही थीं। उसके पास बैठी दूसरी महिला, जो शायद उसकी हमउम्र थी, धीरे से फुसफुसाई, "हे भगवान! कैसा जुल्म है! कोई सुरक्षित नहीं है। बहन-बहू-बेटी, इन हैवानों से बर्बाद हो रही हैं। क्या कर सकते हैं? यहां तो मालिक की मर्जी चलती है।" उसकी आवाज में घबराहट थी, और उसने अपने कांपते हाथों से पल्लू को और कस लिया। दूसरी महिला ने डर से अपने चारों ओर देखा और धीमी आवाज में कांपते हुए बोली, "जब तक हम एकजुट नहीं होंगे, तब तक अत्याचार चलता रहेगा। हिम्मत है आवाज उठाने की?" महिलाओं के शब्दों में बेबसी थी, लेकिन उनके दिलों में छुपा डर और दर्द उस गाँव की हर महिला का प्रतिबिंब था। वे जानती थीं कि विरोध करने का मतलब था अपनी जान को खतरे में डालना। वे अपनी बेटियों और बहुओं को घर के अंदर छिपाने की कोशिश करतीं, पर इस डर से कि कब उनके दरवाजे पर भी कोई जुल्म करने आ जाए। चारों ओर फैले डर और चिंता ने गाँव के हर घर को घेर रखा था, मानो यह पीड़ा अब गाँव का हिस्सा बन गई हो।

गाँव में हर तरफ आतंक था। जमींदार और उसके प्यादे खुलेआम अत्याचार करते, और कोई उनकी सत्ता को चुनौती देने की हिम्मत नहीं कर पाता। गाँव की औरतों के दिलों में हर वक्त डर था, और उनकी आँखों में निराशा। वे अपनी बेटियों को देखते हुए घबरातीं, उन्हें घर के भीतर छिपाने की कोशिश करतीं, लेकिन दिल में बसा डर हमेशा बना रहता कि कब यह खौफनाक साया उनके घर तक पहुंचेगा। एक कोने में खड़ी एक युवा लड़की, जो अपनी मां और बहनों के साथ थी, उसकी आंखों में आंसू थे। वह अपनी मां की ओर मुड़कर बोली, "मां, हमारी इज्जत, आत्म-सम्मान कब सुरक्षित होगा? कब अत्याचारों से मुक्ति मिलेगी?"

मां ने अपनी बेबस आंखों में आंसू भरकर उसे देखा। उसकी आवाज में थकान और निराशा थी, "भगवान जाने, बेटी। हम दुआ करते हैं, यह सब खत्म हो। हमें इंसाफ मिले।"

गाँव की गलियां और घर, जो कभी जीवन से भरे रहते थे, अब खौफ के साम्राज्य का हिस्सा बन चुके थे। हर जगह एक अंधकार छाया हुआ था, और हर दिल में डर का साया मंडरा रहा था।

गाँव की पतली, धूल से अटी पगडंडी पर, सूरज की तपिश और वातावरण की निस्तब्धता के बीच, एक हलचल सी दौड़ जाती है। दूर से बैलगाड़ी की मद्धम चरमराहट सुनाई देती है। "मालिक आ रहे हैं!"– यह खबर जैसे बिजली की तरह पूरे गाँव में फैल जाती है। हर घर, हर आंगन, हर चौपाल पर लोग अपने काम छोड़कर खड़े हो जाते हैं, कुछ सिर झुकाए, तो कुछ डर से थरथराते हुए। गाँव की गलियाँ, जो अभी तक लोगों के सामान्य कामकाज और बच्चों की खिलखिलाहटों से गूंज रही थीं, अचानक शांत हो जाती हैं। बैलगाड़ी धीरे-धीरे नज़दीक आती है, उस पर पुआल का मुलायम बिछावन, और उस बिछावन पर लेटे

मालिक, जिनके दोनों पैर उनके सेवक लगातार दबाए जा रहे हैं। बैलगाड़ी के आते ही लोग अदब से कतार में खड़े हो जाते हैं, एक स्वर में गूंज उठता है, "मालिक की जय हो! मालिक की जय हो!!" आवाज़ में निष्ठा के साथ-साथ डर की ध्वनि भी मिश्रित होती है। किसी की हिम्मत नहीं होती कि वह आँखें उठाकर सीधे मालिक की ओर देख सके।मालिक का चेहरा, रौब और अभिमान से चमकता हुआ, हवा में एक ऐसी आभा बिखेरता है कि गाँव के बुज़ुर्गों तक को झुककर सलाम करना पड़ता है। हवेली के विशाल दरवाजे पर बैलगाड़ी रुकती है। मालिक बिना किसी की ओर देखे, धीमे-धीमे उतरते हैं, सेवक उनके पीछे-पीछे चलते हैं। एक आदेश पर वह आदमी जिसे दिन में भी डरावने सपने आते हैं, तत्काल बुलाया जाता है। वह कांपता हुआ मालिक के सामने खड़ा होता है, और मालिक की तीखी डांट और फटकार सुनने के बाद उसकी सजा तय होती है। गाँव में हर किसी को मालूम होता है कि मालिक से बगावत का मतलब है बर्बादी।

आसमान में धीरे-धीरे बदलते बादलों के बीच हल्की सी रोशनी दिखने लगी है। वह रोशनी किसी आशा की किरण की तरह दूर-दूर तक फैली हुई है, जैसे सूरज का तेज किरणों के साथ धीरे-धीरे हर अंधेरे को चीरकर आगे बढ़ता है। गाँव के कच्चे रास्तों पर बैल गाड़ी की चरमराती आवाज के साथ किसानों की धीमी गुनगुनाहट सुनाई देती है। जमींदार के दबाव में वर्षों से जकड़े किसान, जिनकी पीठ पर मेहनत की धूल और पसीने के निशान हैं, अब भी अपने ख्वाबों की खेती में डूबे हुए हैं।

अभी कुछ ही साल हुए हैं जब आजादी की सुबह ने उनके जीवन में दस्तक दी है। वह आजादी, जिसके लिए उन्होंने सालों तक गुलामी की जंजीरों में संघर्ष किया था, वह उनके दिलों में नया जोश और उम्मीद लेकर आई है। हवा में एक अजीब सी हलचल है, जैसे गाँव के हर कोने में बदलाव की बयार बह रही हो। पेड़ों पर बैठे पक्षियों की चहचहाहट में भी अब आजादी का गीत गूंजने लगा है। गाँव की गलियों में कई नए चेहरे नजर आने लगे हैं। इनमें से कुछ किसान नेता हैं, जो संविधान की रोशनी में पले-बढ़े हैं। अब उन्हें समझ आने लगा है कि उनके पास भी हक हैं, अधिकार हैं, जिन्हें वे जमींदारों से हासिल कर सकते हैं। अब वे अपनी तकदीर को खुद लिखने के लिए तैयार हैं। हाथों में कुदाल, फावड़ा, खुरपी और हल पकड़े हुए इन किसानों के दिलों में नई उमंग जागी है।मिट्टी की महक और धुएं से भरे इस वातावरण में संघर्ष की एक अदृश्य लहर दौड़ रही है। खेतों के बीच चलती हुई हवा अब केवल फसल नहीं, बल्कि स्वतंत्रता और स्वाभिमान की सुगंध भी लेकर आती है। गाँव के बुजुर्ग अपने अनुभवों की गठरी बांधकर युवा पीढ़ी को राह दिखा रहे हैं। अब उनका सपना सिर्फ दो वक्त की रोटी से बड़ा हो चुका है।

एक धूप भरी सुबह, जब सूरज की पहली किरणें पहाड़ीगांव की चोटी पर बिखर रही थीं, तब गांव में हलचल बढ़ गई थी। गांव के चौक पर, लोग इकट्ठा हो रहे थे, उनकी आंखों में शंका और उम्मीद दोनों की झलक थी। यह एक खास दिन था, जब प्रख्यात नेता शंकर शास्त्री अपने आदर्शों और प्रेरणादायक विचारों के साथ गांव में पधारने वाले थे। उनका व्यक्तित्व अपने आप में एक जादू था। उनकी मौजूदगी से गांव का वातावरण धीरे-धीरे बदलने लगा। जैसे-जैसे वे गांव के बीच पहुंचे, उनकी आवाज़ की गूंज ने गांव की सड़ी-गली दीवारों को भी झकझोर दिया। उनके शब्दों में एक ऊर्जा थी, जो सीधे दिलों में उतरती

जा रही थी। किसान, जो पहले ही जमींदारों की बंधक स्थिति में थे, अब उनकी बातें सुनकर एक नई आशा और जोश से भरने लगे थे।

"भाइयों! समय आ गया है, जमींदार के आतंक से खुद को मुक्त करने का," उन्होंने कहा, और जैसे ही यह वाक्य उनके मुंह से निकला, वहां मौजूद सभी किसानों की आंखों में चमक आ गई। एक अजीब सी हलचल का अनुभव हुआ, मानो गांव की हवाओं में एक नई उम्मीद की लहर दौड़ गई हो।

गांव में किसानों की आवाजें, हल चलाने की ध्वनियां और उनके संघर्ष का संकल्प वातावरण को गूंजायमान कर रहा था। पहले जो लोग भय और गुलामी में जीते थे, अब उनमें एकजुटता और संघर्ष की भावना जागृत हो रही थी। शास्त्री जी की बातें किसानों के दिलों में एक नई ऊर्जा संचार कर रही थीं, जो उनके अंदर छिपी हुई ताकत को जागृत कर रही थी।

किसान, संदेह के साथ बोले, "जी, चाहते हैं, पर डरते हैं। हम क्या कर सकते हैं? जमींदार का आतंक बहुत बड़ा है।"

शास्त्री ने उन्हें गहराई से देखा और कहा, "डरने का समय बीत गया। जब तक आप एकजुट नहीं होंगे, तब तक अत्याचार जारी रहेंगे। क्या अपने बच्चों के लिए यही भविष्य चाहते हैं? क्या यह सही है कि आपकी मेहनत का फल कोई और ले जाए?"

किसान, "नहीं, शास्त्री जी!" उन्होंने एक स्वर में कहा।

शास्त्री ने आगे कहा, "संविधान समानता का अधिकार देता है। यह आपका हक है। अगर हम सब एक होकर खड़े हो जाएं, तो कोई भी ताकत हमें रोक नहीं सकती।"

किसान, अब कुछ आश्वस्त होते हुए बोले, "लेकिन, शास्त्री जी, अगर हम उनके खिलाफ खड़े हुए, तो वे हमें बर्बाद कर देंगे। हमारी महिलाओं और बच्चों का क्या होगा?"

शंकर शास्त्री ने कहा, "अगर आज नहीं लड़े, तो फिर कभी नहीं लड़ पाएंगे। याद रखिए, एकजुटता में ताकत है। जमींदार की ताकत हमसे नहीं, हमारे डर से है। जिस दिन सब एक होकर खड़े हो जाएंगे, उस दिन उसका साम्राज्य कांप उठेगा। हम सब को एक साथ लड़ने की आवश्यकता है।"

उनकी बातें किसानों के दिलों में आग लगा रही थीं। एक नई चेतना और जोश के साथ, वे सब एकजुट होने लगे। गांव की हवा में बदलाव की खुशबू फैलने लगी।

किसानों के बीच अब संकल्प की एक लहर चलने लगी थी। वे एक-दूसरे की ओर देख रहे थे, और उनकी आंखों में अब डर नहीं, बल्कि लड़ाई की तैयारियों की चमक थी। शंकर शास्त्री की प्रेरणादायक बातें और उनका संकल्प गाँव में बदलाव की बयार लाने लगे। धीरे-धीरे, गांव के वातावरण में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ, जो किसानों को एकजुट कर रहा था। उनकी आवाजें, उनके संघर्ष का संकल्प, और एकजुटता की भावना अब गांव की पहचान बन चुकी थी। गांव अब एक नई दिशा की ओर बढ़ रहा था, जहाँ

प्रत्येक किसान अपनी मेहनत का फल खुद पाने के लिए तैयार था। यह एक नई शुरुआत थी, जो न केवल गांव के लिए, बल्कि पूरे समाज के लिए एक परिवर्तन का प्रतीक बन गई।

गांव का माहौल एक अनोखी उम्मीद और हिम्मत से भरा हुआ था। शंकर शास्त्री ने जब पहली बार किसानों को अपनी बातों से प्रेरित किया था, तब वह आशा की एक नई किरण लेकर आए थे। उनका संवाद जैसे पत्तों पर गिरते पानी की बूंदों की तरह गांव के हर कोने में गूंज रहा था। शास्त्री की बातें उनके दिलों में ऐसे उथल-पुथल पैदा कर रही थीं, जैसे सर्दी की रात के बाद पहली सुबह का सूरज उग रहा हो। गांव के लोग, जो सदियों से जमींदार के भय और गुलामी की मानसिकता में जकड़े हुए थे, धीरे-धीरे अपनी स्थिति को समझने लगे। शंकर शास्त्री ने उन्हें बताया कि उनके पास ताकत है, जो उन्होंने खुद से छिपा रखी थी। उनका जोरदार भाषण, जो साहस और एकता की बात करता था, जैसे बर्फ की चादर को तोड़ता हुआ एक गर्म लपट बन गया। गांव की चौपाल पर, जहां महिलाएं अपने बच्चे लिए बैठी थीं और पुरुष अपने काम से लौटकर इकट्ठा हुए थे, शास्त्री ने संकल्प का उद्घोष किया। "अब हम जमींदार के खेतों में नहीं, बल्कि अपने खेतों में हल चलाएंगे।" यह वाक्य गांव में गूंज उठा। सबकी आंखों में एक नई रोशनी थी, जैसे उन्हें पहली बार अपने जीवन का अर्थ समझ में आ रहा हो। लेकिन फिर भी, आशंकाओं का बादल धीरे-धीरे उग आया। एक किसान ने सवाल उठाया, "क्या होगा, जमींदार ने पकड़ लिया तो?" उसकी आवाज में भय था, जो पूरे गांव की चिंताओं को दर्शा रहा था।

शंकर शास्त्री ने उस किसान की ओर देखकर दृढ़ता से कहा, "पीछे नहीं हटना है। अगर हम पीछे हटे, तो जमींदार का आतंक खत्म नहीं होगा। हमें यह लड़ाई किसी भी कीमत पर जीतनी है।" उनके शब्दों में एक ऐसा बल था, जो सबकी हिम्मत को और बढ़ाने लगा।

अब गांव का हर व्यक्ति, चाहे वह पुरुष हो या महिला, उस संकल्प को अपने दिल में महसूस करने लगा। उन्होंने अपने खेतों की ओर देखना शुरू किया, जहां उनकी मेहनत का फल मौजूद था, लेकिन जमींदार की तानाशाही के कारण वह सब छीन लिया गया था। बच्चे दौड़ते हुए अपनी माताओं के पास पहुंचे और पूछने लगे, "क्या हम सच में जमींदार के खिलाफ लड़ेंगे?" महिलाएं अपनी चूड़ियों की खनक में उस संकल्प को दोहराने लगीं। पुरानी परंपराओं और डर से बाहर निकलकर, अब वे अपनी पहचान बनाने को तैयार थे। गांव में अब एक नया सवेरे का आभास होने लगा था। शंकर शास्त्री के नेतृत्व में, किसानों ने एकता का संकल्प लिया। उनकी हिम्मत और जोश से गांव का माहौल परिवर्तन की ओर अग्रसर था। जैसे ही सूरज उगने वाला था, गांव के लोगों ने ठान लिया कि वे अपनी किस्मत खुद लिखेंगे, जमींदार की तानाशाही को खत्म करके। उन्होंने अपने दिल में एक नई रोशनी जगाई, और अब हर किसी का मन में एक ही ख्याल था - "हम जमींदार के खिलाफ लड़ेंगे, अपने हक के लिए!"

नहर के अभाव में धान की खेती वर्षा ऋतु पर पूरी तरह निर्भर है। जैसे ही चढ़ते आषाढ़ का महीना आता है, आकाश में बादल उमड़ने-घुमड़ने लगते हैं। बादल घने होकर, जैसे धरती के सिर पर एक विशाल काली छतरी तान देते हैं। ऐसा लगता है मानो मेघों का बरसना निश्चय ही होने वाला है। इस मौसम की तैयारी में, पक्षियों की चहचहाहट और कोयल की 'कूहू-कूहू' आवाज़ वातावरण को सुरम्य बना रही है। मोर अपनी सुंदरता का प्रदर्शन करते हुए 'पीहूं-पीहूं' करने लगे हैं, मानो वे भी बारिश की खुशी में नाच

रहे हों। छोटे-छोटे चिड़ियों के झुंड रेत में नहाने का आनंद ले रहे हैं, और मेंढक अपनी टर्र-टर्र की धुन में मग्न हो गए हैं। बच्चों की मृदुल किलकारियों के बीच, घर के बाहर पड़ा सामान जैसे लकड़ी, कपड़े, खाट, पीढ़ा, और पशु-चारा जल्दी-जल्दी घर के अंदर समेटा जा रहा है। हर जगह गहमा-गहमी है; घर में जगह कम पड़ने लगी है।

इस वर्ष बारिश समय पर हुई है, और धान के बीज रोपे जाने की तैयारी हो चुकी है। किसान हल, जुआठ, हेंगा, जोती, नाधा, और पैना लेकर अपने बैलों को हांकते हुए सिवान में पहुंचे हैं। पर इस बार किसानों का मनोबल अलग है। रियानों ने एकजुट होकर जमींदार के खिलाफ विद्रोह का निर्णय लिया है। सभी किसान अपने खेतों में हल चलाने का काम कर रहे हैं, जबकि पहले वे हमेशा जमींदार के खेतों में काम करते थे।

जमींदार को जब इस बगावत की खबर मिली, तो वह आगबबूला हो उठा और हाथी पर सवार होकर अपने खेतों की ओर चल दिया। खेतों के नजदीक पहुंचते ही उसने जो नजारा देखा, उसे देखकर उसकी आँखें क्रोध से लाल हो गईं। उसने रियानों को गरियाते हुए धमकाया, पर किसानों ने उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया और अपनी मेहनत में जुटे रहे। जमींदार की अवमानना ने उसके भीतर क्रोध भड़काया। वह बेकाबू होकर हाथी से किसानों को कुचलने का प्रयास करने लगा। पर किसान डरने के बजाय उसके आगे आए, और खेतों में हल चलाते रहे। वह किसानों की एकता और उनके धैर्य को देखकर चकित था। उसने शास्त्री को संबोधित करते हुए कहा, "शंकर शास्त्री, तुम कौन होते हो इन्हें भड़काने वाले? ये हमारे बाप-दादाओं के जमाने से हराई करते आए हैं, और हमेशा करेंगे।"

शंकर शास्त्री ने आत्मविश्वास के साथ उत्तर दिया, "जमींदार साहब! वक्त बदल गया है। सभी किसान जाग चुके हैं। अब ये आपकी हराई नहीं करेंगे।"

जमींदार ने क्रोधित होकर कहा, "इनके साथ तुम्हें भी अंजाम भुगतना पड़ेगा।"

शंकर शास्त्री ने धैर्यपूर्वक जवाब दिया, "चाहे जो हो, हम इनके हक के लिए लड़ेंगे। हमें डराकर इन्हें रोक नहीं सकेंगे। सभी इस अन्याय के खिलाफ खड़े होने को तैयार हैं। हम मुफ्त की हराई नहीं करेंगे।"

जमींदार ने चिल्लाते हुए कहा, "मैं सबको बर्बाद कर दूंगा!" लेकिन इस बार किसानों के दिलों में संघर्ष की भावना जागृत हो चुकी थी।

आषाढ़ का महीना केवल बारिश की तैयारी नहीं, बल्कि एक नई आशा और साहस का प्रतीक बन गया है। किसानों ने एकता और संघर्ष की एक नई परिभाषा स्थापित की है, जो आने वाले दिनों में उनके हक के लिए लड़ाई की आधारशिला बनेगी।

जमींदार हवेली के विशाल कक्ष में प्रवेश करते ही भारी कदमों से दीवान पलंग की ओर बढ़े। कमरे में हल्की रोशनी थी, लेकिन बाहर का अंधेरा हर पल और गहरा होता जा रहा था। हवा में घुली हल्की ठंडक के बावजूद उनके माथे पर पसीने की बूंदें झलकने लगी थीं। हर कदम जैसे उनके भीतर उठ रहे तूफान की गवाही दे रहा था। वे धीरे से दीवान पर गिर पड़े, मानो युद्ध में थका हुआ एक योद्धा अपनी

अंतिम सांसें गिन रहा हो। कमरे के बड़े-बड़े खिड़की दरवाजों से आती ठंडी हवा भी अब उनके भीतर की जलन को शांत नहीं कर पा रही थी। हवाओं के साथ कहीं दूर से आती कुत्तों की हल्की आवाजें इस सन्नाटे को और गहरा कर रही थीं। बाहर का अंधकार जैसे उनके भीतर के निराशा से मेल खा रहा था। आसमान उन्हें फटता हुआ महसूस हो रहा था, मानो हर तारे के साथ उनके अरमान भी टूट कर गिर रहे हों। धरती उनकी आँखों के सामने मानो धंसने लगी हो, जैसे उनकी जमीन अब उनके पैरों तले से खिसक गई हो।

जमींदार के भीतर एक अजीब सी बेचैनी ने घर कर लिया था। उनके सीने में उठ रही जलन उन्हें तेजाब में गलते हुए लोहे की तरह महसूस हो रही थी। दिल में एक ही टीस बार-बार उठ रही थी– किसान, जिन पर उनका हुक्म चलता था, अब उनके हाथों से छिटक कर जा चुके थे। उनका वर्चस्व, उनका साम्राज्य, जिसे उन्होंने वर्षों तक अपने अधीन बनाए रखा था, आज टूट कर बिखर रहा था। उनकी आँखों में रह-रह कर रियानों की एकजुटता की छवि उभर रही थी। किसान, जिन्हें उन्होंने हमेशा कमजोर समझा था, आज एकता के बल पर उन्हें चुनौती दे रहे थे। उनका अस्तित्व, उनकी शक्ति, सब कुछ अब सवालों के घेरे में आ गया था। हर बीतते क्षण के साथ, यह एहसास और गहरा होता जा रहा था कि अब हवेली की दीवारों के भीतर का साम्राज्य भी हिलने लगा है। जमींदार के भीतर एक गहरी हताशा भर गई थी।

गाँव का दृश्य जीवंत और उत्साही है। सूरज धीरे-धीरे आकाश में ऊँचाई पर चढ़ रहा है, और उसके हल्के सुनहरे किरणें खेतों पर बिखर रही हैं। सभी किसानों ने अपने-अपने खेतों को अच्छी तरह से जोताई कर ली है, जिससे मिट्टी मुलायम और हल्की हो गई है। मिट्टी से ताज़गी की सौंधी महक हवा में घुली है, और खेत समतल हो चुके हैं, जैसे किसी चित्रकार ने कूची से हर जगह को समान रूप से रंग दिया हो।

अगले दिन की शुरुआत गाँव के लिए विशेष है। सभी ग्रामीण, पुरुष और महिलाएँ, मिलकर बिया कबरिया का काम कर रहे हैं। धान के छोटे-छोटे पौधे, जो हरे रंग की नन्ही-नन्ही टहनियों जैसे दिखते हैं, जड़ों से सावधानीपूर्वक उखाड़े जा रहे हैं। इन नाजुक पौधों को समूहों में बाँधा जा रहा है, जिसे 'बोझ' कहते हैं। महिलाएँ और पुरुष इन बोझों को सिर पर रखकर एक दूसरे के खेतों की ओर बढ़ रहे हैं, जैसे किसी पवित्र कार्य के लिए जा रहे हों। हर ओर हँसी-मजाक और बातों की गूँज है, जो इस कठिन परिश्रम को एक उत्सव जैसा महसूस कराती है।

महिलाएँ धान की रोपाई में लगी हुई हैं। उनके हाथों में छोटे-छोटे हरे धान के पौधे हैं, जिन्हें वे बड़े ध्यान से कतारबद्ध तरीके से पानी से भरे हुए खेतों में रोप रही हैं। पानी में उनका प्रतिबिंब मानो किसी धरोहर को सँवारने का प्रतीक हो। रोपनी का काम उनकी दिनचर्या का हिस्सा है, परन्तु इस प्रक्रिया में संगीत भी जुड़ा हुआ है। महिलाएँ समूह में पारंपरिक रोपनी गीत गा रही हैं, जो उनकी मेहनत में एक अलग ही आनंद भर देते हैं। उनके गीतों की ध्वनि दूर तक गूंजती है, जैसे उनकी आवाज़ खेतों और पानी के साथ मिलकर एक संगीतमय धारा का रूप ले रही हो। धान की खेती का यह दृश्य सामूहिक प्रयास, समर्पण और जीवन के प्रति उनके जुड़ाव को दर्शाता है। करीब दस दिनों तक यह

प्रक्रिया जारी रहती है, जब तक कि सभी के खेतों में हरी-हरी पौधों की कतारें न दिखने लगें। हर दिन नए जोश और उत्साह के साथ यह क्रम आगे बढ़ता है, जैसे जीवन की गति यहाँ इस रोपाई के साथ थिरक रही हो। गाँव की गलियों में सादगी और संघर्ष की मिली-जुली तस्वीरें देखने को मिलती हैं। किसानों के चेहरों पर मेहनत की लकीरें स्पष्ट हैं, और उनके तन-मन में आत्मसम्मान की झलक दिखाई देती है।

सूरज की तपती किरणें खेतों में बिखरी हैं, जहाँ किसान अपने कामों में जुटे हुए हैं। उनके पसीने से खेत सींचे जा रहे हैं, लेकिन यह पसीना उनके अपने खेतों की मिट्टी में घुल रहा है। अपनी जमीन का प्यार और लगाव उनमें अदम्य साहस भर देता है, और वे जमींदार के खेतों को जोतने के लिए तैयार नहीं होते।

जमींदार, जो अपने बड़े-बड़े खेतों के मालिक हैं, अपनी धन और शक्ति के बल पर सभी को नियंत्रित करने की कोशिश करते हैं। साम, दाम, दण्ड और भेद–जमींदार ने सारे उपाय आजमाए हैं, लेकिन गाँव के किसान अपने स्वाभिमान से पीछे हटने को तैयार नहीं हैं। इस प्रतिरोध के बाद, जमींदार ने पलामू से मजदूर बुलवाए। ये मजदूर बाहर से आए हैं, अनजाने चेहरों के साथ, जिन्हें गाँव के वातावरण से कोई विशेष लगाव नहीं है। वे अपने लिए जीवन यापन के साधन जुटाने आए हैं। जमींदार उनके सामने पैसे की थैली खोलता है, और मजबूरी में वे हल चलाने के लिए तैयार हो जाते हैं। ये बाहरी मजदूर न केवल जमींदार के खेतों की जुताई करते हैं, बल्कि वे बीज बिखेरते हैं, पौधों की रोपाई करते हैं, और धान की फसल को काटते हुए धूप में झुलसते हैं। वे लगातार काम में लगे रहते हैं, मगर जमींदार को इस बार अपनी जेब भारी लगने लगती है। जबकि पहले हराई के दिन रियानों को केवल पत्तियों के दोनें में सत्तू , नमक , प्याज और हरी मिर्च, वह भी एक समय का भोजन के देते थे। अब खर्चा बढ़ता जा रहा है। हालांकि, जमींदार का काम किसी तरह हो गया , लेकिन वह असंतुष्ट है क्योंकि उसका मुनाफा अब उतना नहीं रहा, जितना पहले था। यह उस सामाजिक ढांचे की गवाही है, जहाँ श्रम, आत्मसम्मान, और आर्थिक संतुलन के बीच असंतुलन पनपा है।

सुबह का वक्त था। गाँव के आँगनों में हल्की धूप खिली थी और महिलाएँ अपने रोजमर्रा के कामों में लगी हुई थीं। कुछ चूल्हे पर रोटियाँ सेंक रही थीं, तो कुछ आँगन में धान कूटने की तैयारी कर रही थीं। हर ओर एक ठहरी हुई शांति थी, पर यह शांति किसी बड़े तूफान से पहले की शांति जैसी थी। गाँव वालों के दिलों में एक अजीब सा सन्नाटा पसरा हुआ था, क्योंकि वे जानते थे कि आज कुछ अलग होने वाला है। अचानक, दूर से कुछ घोड़ों की टापों और जूतों की धमक सुनाई दी। जमींदार के प्यादे आ रहे थे। उनके भारी-भरकम जूते गाँव की मिट्टी पर जोर से पड़ रहे थे, जैसे वह जमीन उनकी जागीर हो। प्यादों की आँखों में वही पुरानी धौंस, चेहरे पर वही निर्दयी हंसी और हाथों में लाठी की धमक। उनके लिए गाँव की औरतें और किसान सिर्फ कमजोर प्राणी थे, जिन पर वे कभी भी अपनी ताकत आजमा सकते थे। प्यादों का ये बर्ताव गाँव वालों के लिए नया नहीं था। वे हमेशा से आते थे, गालियाँ देते थे, औरतों को पकड़ते थे, और कभी धान सोहने के लिए तो कभी अपने मालिकों की हवस पूरी करने के

लिए घसीटते थे। लेकिन आज हालात अलग थे। आज गाँव जाग चुका था, उसका खून खौल चुका था। महिलाएँ भी चुपचाप सहने की जगह आज लड़ने को तैयार थीं।

जैसे ही प्यादों ने महिलाओं की ओर अपने हाथ बढ़ाए, अचानक हर घर से लोग निकल आए। उनके चेहरे पर डर की जगह दृढ़ता थी, हाथों में लाठी थी, और दिलों में एकता। यह गाँव अब वह कमजोर गाँव नहीं रहा था, जिसे जमींदार के प्यादों से डर लगता था। अब गाँव का हर व्यक्ति एक सिपाही था, अपने हक की लड़ाई लड़ने को तैयार। प्यादों को शायद अंदाजा भी नहीं था कि गाँव के लोग इस तरह का जवाब देंगे। उन्होंने पहले तो कुछ समझा नहीं, लेकिन जब तक वे कुछ समझ पाते, वे गाँव वालों के मजबूत हाथों में थे। उनकी लाठियाँ अब बेकार हो चुकी थीं। एक के बाद एक गाँव वालों ने उन प्यादों को पकड़ लिया, और उन्हें पास के एक घर में घसीट कर बंद कर दिया। घर के अंदर से चीखने की आवाज़ आने लगी। धड़-धड़ाते हुए दरवाजे पर प्यादे मदद की गुहार लगाने लगे, लेकिन कोई उन्हें सुनने वाला नहीं था। बाहर खड़े गाँव वाले शांत थे, जैसे यह उनकी रोजमर्रा की लड़ाई हो। धीरे-धीरे चीखें धीमी पड़ने लगीं, और जब दरवाजा खुला, तो प्यादों के चेहरे पर वह डर था जो उन्होंने पहले कभी नहीं महसूस किया था। उनके चेहरे पर वही आतंक था, जो वे अब तक गाँव वालों की आँखों में देखते आए थे। गाँव की मिट्टी आज अपने बच्चों की बहादुरी से सराबोर हो चुकी थी।

गाँव के सभी लोग धीरे-धीरे काली माई के मंदिर के चबूतरे के पास इकट्ठा होने लगे हैं। मंदिर के पास एक पुराना, घना नीम का पेड़ खड़ा है, जिसकी शाखाएँ सावनी हवा के झोंकों से झूम रही हैं। पत्तियों की सरसराहट सुनाई दे रही है, मानो यह पेड़ भी इस विशेष अवसर का साक्षी बन रहा हो। चबूतरे के चारों ओर गाँव के लोग खामोशी से खड़े हैं, उनकी आँखों में एक अजीब-सी उम्मीद और चिंता का मिश्रण है। तभी उड़ कर ख़बर हवेली तक पहुँच जाती है। मालिक, जिनका हमेशा से गाँव पर प्रभुत्व रहा है, अपनी शान के साथ हाथी पर सवार होकर आते हैं। भले हाथी की चाल धीमी हो, लेकिन उसके हर कदम के साथ गाँव के लोगों की धड़कनें तेज हो रही हैं।

मंदिर के पास की शाम गहरा रही थी। आसमान में हल्के नारंगी और लाल रंग बिखरे हुए थे, जैसे सूरज भी किसी बड़ी घटना का साक्षी बनने को रुक गया हो। गाँव के लोग मंदिर के आसपास इकट्ठा हो गए थे। हवा में एक अजीब सी खामोशी थी, जो कभी-कभी नीम के पेड़ की सरसराहट से टूट जाती। सबकी नज़रें मंदिर के चबूतरे पर टिकी थीं, जहाँ जमींदार का विशाल हाथी धीरे-धीरे आकर रुका। जमींदार के उतरते ही हाथी ने अपनी सूंड को ऊपर उठाकर जोर से गरज भरी आवाज़ की, मानो मालिक के अधिकार का प्रदर्शन कर रहा हो। लेकिन इस बार दृश्य कुछ अलग था। मालिक के चेहरे पर हमेशा की तरह रौब और धौंस नहीं था, बल्कि उनके कदमों में एक थकान और चेहरे पर हार की हल्की सी परछाईं थी। उन्होंने बिना किसी धूमधाम के, बिना किसी आसन या बिछावन के, सीधे चबूतरे पर धूल में बैठने का निर्णय लिया। यह दृश्य गाँव वालों के लिए चौंकाने वाला था, क्योंकि मालिक का ऐसा झुकाव उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था।

गाँव वालों में खुसर-पुसर शुरू हो गई थी। कुछ के चेहरे पर भय था, लेकिन अब उनके डर के पीछे एक नई उम्मीद की किरण भी झलक रही थी। वहीं, कुछ की आँखों में गुस्सा था, जो सालों से दबा हुआ था

और अब फूटने को तैयार था। शंकर शास्त्री, गाँव के लोगों के नेता, शांत लेकिन दृढ़ कदमों से आगे बढ़े। उनकी आँखों में आत्मविश्वास की चमक थी, और उनकी चाल में वह सामूहिक शक्ति जो अब पूरे गाँव के साथ थी। मालिक ने थकी हुई आवाज़ में बोलना शुरू किया, "हम शांति चाहते हैं। हम समझौता करना चाहते हैं। इस लड़ाई में सबका नुकसान हो रहा है। मैं तुम्हें और तुम्हारे लोगों को कुछ जमीन दूंगा, अगर तुम बगावत को खत्म कराओ।"

लेकिन शास्त्री की आँखें मालिक की हर चाल को भांप चुकी थीं। उन्होंने गहरी सांस लेते हुए कहा, "संघर्ष जमीन के टुकड़े के लिए नहीं है। हमारा संघर्ष स्वतंत्रता, सम्मान और स्वाभिमान के लिए है। अब कोई समझौता नहीं होगा।"

शास्त्री की आवाज़ में ऐसी दृढ़ता थी कि कुछ पल के लिए हवा भी ठहर गई। नीम के पेड़ की पत्तियाँ भी मानो शांत हो गईं, जैसे वे भी इस फैसले का इंतजार कर रही थीं। गाँव वालों ने एक-दूसरे की ओर देखा, उनकी आँखों में चमक थी। यह वही गाँव था जो कभी जमींदार के खौफ में जीता था, लेकिन आज उसके लोग बिना झुके खड़े थे।

मालिक ने अपनी सारी शक्ति और चालाकी लगाई। उन्होंने और भी लोभ दिए, वादे किए, लेकिन शास्त्री और गाँव वालों की एकता को कोई हिला नहीं सका। मालिक के शब्द अब बेअसर हो चुके थे, जैसे सूखी जमीन पर बारिश की बूंदें। थक-हार कर, उन्होंने आखिरी बार सोचा कि शायद कुछ समय बाद हालात उनके पक्ष में बदल सकते हैं। वे उठे, और भारी कदमों से अपने हाथी की ओर लौटे। जब वे हाथी पर चढ़े, तो गाँव की ओर एक नजर डाली। उनकी आँखों में अब पहले जैसी रौब नहीं थी, बल्कि एक थकी हुई पराजय का भाव था। उन्होंने अपने चापलूसों को बुलाने का आदेश दिया और पलामू से नए मजदूरों को लाने की बात की। गाँव वालों ने देखा, और नीम के पेड़ की सरसराहट फिर से सुनाई देने लगी, मानो वह भी जानता हो कि आज गाँव ने एक नई कहानी लिखी है - स्वतंत्रता और स्वाभिमान की कहानी, जो अब किसी मालिक के डर या लालच के अधीन नहीं थी। मंदिर के आसपास की हवा अब शांत थी, लेकिन उस शांति में गाँव वालों की जीत की गूँज सुनाई दे रही थी।

अगहन महीने की ठंडी हवा धीरे-धीरे खेतों में बह रही थी। चारों तरफ सुनहरे धान के खेत लहलहा रहे थे, जो अब पूरी तरह पक चुके थे। हवा के हल्के झोंकों से धान की बालियाँ सरसरा रही थीं, जैसे किसी प्राकृतिक संगीत का सृजन कर रही हों। आसमान में उड़ते पक्षी मानो इस सुनहरे मौसम का स्वागत कर रहे थे। खेतों में किसानों की हलचल तेज हो गई थी; हर कोई अपनी फसल की कटाई में जुटा हुआ था। इस बार का मेहनत फल देने वाला साबित हुआ था–धान की फसल भरपूर हुई थी, और किसानों के चेहरों पर संतोष का भाव था। लेकिन इस बार गाँव के किसान मालिक के खेतों में कटनी करने नहीं गए थे। जमींदार को पहली बार अपनी फसल कटवाने के लिए पलामू से मजदूर बुलाने पड़े थे, जो उनके लिए न केवल महंगा, बल्कि असहज भी साबित हो रहा था। हर बार मजदूरों को बुलाकर धान कटवाना और खलिहान में जमा करवाना एक बड़ी चुनौती बन गया था। खलिहान में धान के ऊँचे-ऊँचे बोझे लगे थे, लेकिन दँवनी का काम अभी बाकी था।

इसी बीच गाँव में हलचल बढ़ रही थी। किसानों का एक समूह, जिसमें शंकर शास्त्री भी शामिल थे, एक दालान में बंद कमरे में मीटिंग कर रहा था। कमरे के बाहर हवा की सरसराहट और सन्नाटे के बीच कुछ गंभीर बातें चल रही थीं। बैठक में सभी की आँखों में एक अजीब सी चमक थी–आगामी योजना पर चर्चा हो रही थी। वातावरण में घनी गंभीरता तैर रही थी, मानो सब कुछ ठहर सा गया हो। लेकिन इस मीटिंग की खबर किसी मुखबिर ने मालिक तक पहुँचा दी। मालिक पहले से ही चिंतित था कि किसान उसके खेतों में काम करने से क्यों कतरा रहे हैं। उसने बनारस से भाड़े के गुंडे बुलवा लिए थे, और आज उनके साथ दालान को घेरने की योजना बनाई थी। जैसे ही बैठक के बीच में यह सूचना मिली कि मालिक के गुंडों ने दालान को चारों तरफ से घेर लिया है, वहाँ का माहौल अचानक तनावपूर्ण हो गया।

शंकर शास्त्री ने अपनी निगाहों से नवजवानों को इशारा किया। बिना एक पल की देरी किए, कुछ युवा एकाएक किवाड़ खोल कर बाहर निकले। उनकी आँखों में साहस था और कदमों में गजब की तेजी। बाहर निकले तो हवा के झोंकों के साथ दौड़ते हुए उन्होंने एक पल को भी पीछे मुड़कर नहीं देखा। उनके तेज़ कदमों की आहट और वातावरण की चुप्पी के बीच एक संघर्ष की शुरुआत हो चुकी थी।

जंगली इलाके की अंधेरी रात थी। हल्की ठंडक और सन्नाटे के बीच केवल कीटों की धीमी आवाजें गूंज रही थीं। आसमान में बादल छाए हुए थे, और चाँद की धुंधली रोशनी में गांव के खेत और खलिहान धुंधले से दिखाई दे रहे थे। हवा में खून और पसीने की मिली-जुली गंध थी, मानो यह संकेत हो कि कुछ असाधारण होने वाला है।

पहले किसान की साँसें तेज चल रही थीं, मानो दौड़कर आया हो। उसकी आँखों में वर्षों की पीड़ा और संघर्ष का गुस्सा झलक रहा था। उसने अपने साथियों की ओर देखा, जो उसकी तरह ही थके हुए, लेकिन दृढ़ निश्चय से भरे हुए थे।

"हमें तो उन गुंडों से लड़ना ही होगा। अगर हम खामोश रहे, तो वे हमें ही खत्म कर देंगे," उसने घबराहट और उत्साह के बीच कहा।

दूसरे ने संदेह में पूछा, "लेकिन हम उनका मुकाबला कैसे करेंगे? उनके पास तो हथियार भी हैं।"

तीसरे ने शांत स्वर में उत्तर दिया, "कोई बात नहीं।"

पहले ने तेजी से हांफते हुए कहा, "जल्दी करो, खलिहान में आग लगानी है! अब और इंतजार नहीं किया जा सकता!"

दूसरा किसान अपनी जेब से सलाई निकालते हुए बोला, "सही कहा तुमने, आज हम अपने अधिकारों के लिए जमींदार को सबक सिखाएंगे!"

तीनों ने अपने भीतर उमड़ते विद्रोह को काबू में रखते हुए, तेजी से खलिहान की ओर दौड़ना शुरू किया। उनके कदम भारी, लेकिन इरादे अटल थे। खलिहान के पास पहुँचते ही उन्होंने धान के गांजों को देखा, जो उनके लिए वर्षों से शोषण और अत्याचार का प्रतीक थे। तीसरे ने बिना वक्त गवाएं सलाई जलाकर

आग लगा दी। सूखी घास और धान की गठरियों ने जल्दी ही आग पकड़ ली, और देखते ही देखते, लपटें आकाश की ओर उठने लगीं।

तीसरा बोला, "अब जमींदार को पता चलेगा कि हमारे धैर्य की भी एक सीमा होती है।"

जंगल में लगी आग की तरह जमींदार का खलिहान चारों ओर से धधकने लगा। लपटें फरफराते हुए हवा में उड़ रही थीं, और किसानों की आँखों में चमक थी। यह वह क्षण था, जो उनके संघर्ष की चरम सीमा को दर्शा रहा था। उस जलती हुई आग में उनकी वर्षों की पीड़ा, दुख, और शोषण झलक रहा था।

पहला किसान गर्व से बोला, "देखो, पूरा खलिहान जल रहा है! ये आग हमारी वर्षों की पीड़ा और संघर्ष का परिणाम है!"

दूसरा आसमान की ओर देखकर धीरे से फुसफुसाया, "ये धुआं और आग की लपटें हमारे संघर्ष की गवाही देंगी। अब तो जमींदार को हमारी ताकत का एहसास हो जाएगा।"

गांव में इस भयंकर दृश्य ने अफरा-तफरी मचा दी थी। जमींदार के गुंडों ने जब आग की लपटों को देखा, तो वे तुरंत खलिहान की ओर दौड़े।

पहला गुंडा घबराते हुए चिल्लाया, "जल्दी करो, खलिहान जल रहा है! हमें इसे बचाना होगा!"

दूसरे ने खलिहान के पास पहुंचकर हताशा में कहा, "बहुत देर हो चुकी है, धान के सभी गांज जलकर राख हो चुके हैं। ये खबर मालिक को तुरंत देनी होगी।"

गुंडे हड़बड़ी में हवेली की ओर भागे और जमींदार को खबर दी। जमींदार का चेहरा गुस्से और चिंता से भर गया। उसकी आँखों में एक साथ कई भाव उभर आए - गुस्सा, हार, और किसानों की ताकत का एहसास। वह समझ गया था कि अब गांव के गरीब किसान चुप नहीं बैठने वाले थे।

आसमान में धुआं और जलती हुई लपटें अभी भी तेज़ी से उठ रही थीं। पूरा वातावरण क्रांति के उस क्षण को महसूस कर रहा था, जो अब इतिहास में दर्ज होने जा रहा था।

अगले दिन गांव का आसमान शाम होते-होते धूसर हो चला था, मानो वह भी किसी आने वाली मुसीबत की आहट महसूस कर रहा हो। चारों तरफ एक अजीब सा सन्नाटा था, जिसे बीच-बीच में हवाओं की सिसकियों के साथ टूटते हुए देखा जा सकता था। ज़मींदार की हवेली के चारों तरफ सिपाहियों का पहरा कड़ा हो गया था। हवेली के अंदर ज़मींदार, अपनी गद्दी पर बैठे, चेहरे पर गुस्से की लकीरें खींचे हुए थे। उनका गुस्सा इतना बढ़ चुका था कि उनकी आंखों में क्रोध की ज्वाला साफ दिखाई दे रही थी।

"ये रियान समुदाय वाले कौन होते हैं मेरे खलिहान को जलाने वाले?" ज़मींदार ने अपनी आवाज़ को तेज़ करते हुए कहा, "जाओ, और पुलिस बुलाओ! एक-एक को उठवाओ, सबको जेल भिजवाओ!"

सिपाहियों की टोलियां तेजी से गांव की ओर निकल पड़ीं। पुलिस की जीपें धूल उड़ाती हुई गांव के बीचों-बीच पहुंची और एक के बाद एक घरों पर दस्तक देने लगीं। गांववालों के चेहरे पर दहशत फैलने लगी, जैसे एक सुनामी धीरे-धीरे उनकी शांत ज़िंदगी को निगलने के लिए बढ़ रही हो। हर कोई अपने घर में

दुबका बैठा था, लेकिन दिलों में खौफ दौड़ रहा था। किंतु रियान समुदाय के नेता, जिनकी आंखों में कुछ अलग ही चमक थी, गांव के बीचों-बीच एक चौपाल पर बैठे थे। उनकी उंगलियां मुठ्ठी में बदल चुकी थीं, और होंठों से संकल्प भरे शब्द फूट पड़े, "हमें डरने की ज़रूर नहीं है। शंकर शास्त्री जी हमारे साथ हैं। वो हमें न्याय दिलाएंगे।" गांव की गलियों में हलचल तेज हो गई। पुलिस ने कई लोगों को पकड़ा और जीप में ठूंस दिया। महिलाओं के आंसू और बच्चों की चीखें हवा में घुल चुकी थीं। गांव पर एक काली छाया सी छा गई थी, जैसे अंधेरा हर दिल में पैठ कर गया हो। कुछ ही दिनों बाद, शास्त्री जी के प्रयासों का असर दिखने लगा। अदालत में उन्होंने रेयान समुदाय के किसानों की ज़मानत के लिए पूरे जोश और दलील के साथ लड़ाई लड़ी। अंततः, उनके प्रयासों से सभी किसानों को जमानत मिल गई।

गाँव की गलियाँ उस समय की चुप्पी और डर की साक्षी थीं। हर मोड़, हर दीवार जैसे उस बीते हुए समय का गवाह था, जब लोग बिना आवाज़ किए एक-दूसरे से नज़रें चुराते हुए गुज़रते थे। हवाओं में दहशत का साया लहराता था, मानो पेड़ की पत्तियाँ भी कांपती हों उस भय से जो गाँव पर छाया था। शाम होते ही दरवाज़े बंद हो जाते, और घरों के भीतर डर का कुंडली मारे बैठा रहता था। लेकिन अब माहौल बदल रहा था। हवा में घुली खामोशी अब टूटने लगी थी। जिन गलियों में पहले सिर्फ सन्नाटा पसरा रहता था, वहाँ अब युवाओं के दृढ़ कदमों की आवाज़ गूंजने लगी थी। उनके चेहरे पर वही क्रोध और ज्वाला थी, जो वर्षों से दबा हुआ था। उनके हृदयों में जलते हुए अन्याय के अंगार अब शोला बन चुके थे। जब वे कदम बढ़ाते, तो धरती जैसे उनके संकल्प के बोझ से थरथराने लगती।

आकाश में गहराए काले बादलों की तरह, गाँव का माहौल भी एक गंभीर परिवर्तन की ओर बढ़ रहा था। इन युवाओं के हाथों में मशालें थीं, जो इंसाफ की लौ को जलाए हुए थीं। उनकी आँखों में प्रतिशोध का ऐसा तेज़ था कि जो भी उनके सामने आता, वह उस आग की तपिश महसूस कर सकता था। उनका धैर्य, जो अब तक सब्र की चट्टान पर खड़ा था, अब पानी की तरह बह चुका था। इन गलियों में अब एक नई आवाज़ गूंज रही थी—न्याय की, प्रतिशोध की। पुराने डर और खौफ को अब इन युवाओं के संकल्प ने घेर लिया था। वे अब और नहीं झुकने वाले थे, वे अब किसी भी कीमत पर अपने अपमान का बदला लेने को तैयार थे।

कुहराते हुए कैमूर की पहाड़ियों के घने जंगलों की कंदराओं में सन्नाटा पसरा हुआ था। गहरी रात की स्याही आसमान से टपक रही थी, और कहीं दूर दूर तक बस्ती का नामोनिशान नहीं था। पहाड़ियों पर फैले इन दरख्तों के बीच से आती हुई सरसराहट और पत्तों की खड़खड़ाहट उस भयावह माहौल की झलक दे रही थी, जो इस स्थान की पहचान बन चुकी थी। जंगलों के अंधकार में कुछ परछाइयाँ तेज़ी से आगे बढ़ती जा रही थीं। ये वे योद्धा थे, जिन्हें समाज ने 'डाकू' का नाम दिया था, पर असल में वे अपनी इज्जत, हक, और सम्मान के लिए लड़ने वाले वीर थे। उनके चेहरे पर कठोरता की छाया थी, पर दिलों में दहकता हुआ ज्वाला। न कोई परिवार था, न कोई ठिकाना, केवल संघर्ष ही उनकी जिंदगी का असल मकसद बन चुका था।

जंगल के सन्नाटे के बीच अचानक से गोलियों की आवाज़ गूंज उठी। ये गोलियाँ उस पुलिस और जात्याभिमानी ताकतों के खिलाफ थीं, जिन्होंने इन्हें हराने की कसम खा ली थी। पर इन नौजवानों का

हौसला टूटने वाला नहीं था। हर गोली, हर प्रहार के साथ उनके संघर्ष की लौ और तेज हो जाती। कई वर्षों तक यही युद्ध चलता रहा। कभी संघर्ष की आग तेज हो जाती, तो कभी धीमे-धीमे सुलगती रहती, पर हर लड़ाई के बाद खून की नई बूंदें धरती पर गिरतीं, मानो यह भूमि अपने नायकों के बलिदान की गवाह बन रही हो। धीरे-धीरे, जैसे-जैसे समय बीतता गया, सामंती ताकतों की चीखें कमजोर होने लगीं। आखिरकार, एक दिन वह भी आया, जब इन शोषक सामंतों की आवाज़ पूरी तरह से खामोश हो गई। जंगलों में अब सन्नाटा नहीं, और न ही रक्तपात का वह भयावह दृश्य था। अब सिर्फ सम्मान का बोध था।

पहाड़ी गांव की हवाओं में अब वो सिसकियां नहीं थीं, बल्कि एक नई ऊर्जा दौड़ने लगी थी। वह दिन गए जब जात-पांत और वर्ग की दीवारें लोगों के बीच खिंची रहती थीं। अब गांव के लोग, चाहे किसी भी जाति, वर्ग या पृष्ठभूमि से हों, एक साथ हंसते, बातें और काम करते हैं। सुबह होते ही गांव का चौपाल जीवन से भर उठता है।

डॉ. अमल सिंह 'भिक्षुक'

संप्रति : सहायक प्राध्यापक, ईश्वरदयाल भागवतप्रसाद सिंह महाविद्यालय गढ़नोखा , रोहतास (बिहार)

संपर्क: 133/30, भारती गंज, सासाराम, जिला रोहतास (बिहार)- 821115

मो. : 9135704800, ई-मेल : dramalsingh@gmail.com